कविता

प्रकृति पाठ पढ़ाती है...

प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है,
मार्ग वह हमें दिखाती है।
प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है।

नदी कहती है बहो, बहो
जहां हो, पड़े न वहां रहो।
जहां गंतव्य, वहां जाओ,
पूर्णता जीवन की पाओ।
निरंतर गति ही तो जीवन है।
अगति तो मृत्यु कहाती है।
प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है।

शैल कहते हैं, शिखर बनो,
उठो ऊंचे, तुम तान तनो।
ठोस आधार तुम्हारा हो,
विशिष्टिकरण सहारा हो।
रहो तुम सदा ऊर्ध्वगामी,
ऊर्ध्वता पूर्ण बनाती है।
प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है।

वृक्ष कहते हैं खूब फलो,
दान के पथ पर सदा चलो।
सभी को दो शीतल छाया,
पुण्य है सदा काम आया।
विनय से सिद्धि सुशोभित है,
अकड़ किसकी टिक पाती है।
प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है।

यही कहते रवि शशि चमको,
प्राप्त कर उज्ज्वलता हमको।
अंधेरे से संग्राम करो,
न खाली बैठो, काम करो।
काम जो अच्छे कर जाते,
याद उनकी रह जाती है।
प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है।

Name ⇒ Sapna Kumari
Class ⇒ Xth

Sapna

Sapna Kumari